OM 14 FINAL-c_Page 1 and 2 02-10-2014 18:20 Page 4

दिवाली में कैसे आये हरियाली?

-ब्र.कु.प्रभा, डिफेन्स कॉलोनी, दिल्ली।

सभी अपने-अपने घरों तथा कपड़ों की सफाई दिवाली के दिन कितनी अच्छी तरह से करते हैं और उसका सिर्फ एक कारण है कि घर में कोई नये मेहमान का आगमन होने वाला है। मान्यता है कि धन की देवी श्रीलक्ष्मी इस रात्रि में भ्रमण करती हैं और घरों को धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं। सम्भवतया इसलिए हम सभी सतर्क होकर सहज भाव से सफाई में कोई कोताही नहीं करते। ये भी माना जाता है कि रात्रि के अंतिम प्रहर में मातायें सूप की कर्कश ध्वनि से दरिद्रता को भगाती हैं।

क्या हमनें कभी सोचा है कि श्रीलक्ष्मी के स्वागत या फिर घरों की एक दिन की सफाई से हमारे जीवन में खुशहाली आ सकती है, या हम पूरे वर्ष धन-धान्य से परिपूर्ण रह सकते हैं? ये तो सिर्फ एक मान्यता है कि दीपावली के दिन ऐसा करने से लक्ष्मी जी खुश हो जाती हैं। परंतु आज का मानव पूर्णत: असमंजस की स्थिति में है कि क्या करूँ ऐसा कि आजीवन हम खुशनसीब बनकर रहें, हमारा जीवन कभी भी बदनसीबी को प्राप्त ना करे। दुविधा के इस आलम में हम आपको कुछ ऐसी बातों से अवगत कराते हैं जिससे शायद आपकी परेशानी दूर हो जाये।

श्री लक्ष्मी के स्वागत में प्रतिवर्ष दीपमाला जलाकर भी भारत आज दरिद्र क्यों है? क्या श्री लक्ष्मी जी हमसे रूठ गई हैं? या फिर उनकी विधि पूर्वक पूजन-अर्चन में कुछ कमी आ गई है? यदि घरों की सफाई, पुताई और मिट्टी के दीपकों को जलाने से लक्ष्मी प्रसन्न हो जातीं तो सदियों से लक्ष्मी का आराधक आज दरिद्र और कंगाल क्यों होता! तथा लक्ष्मी को न मानने वाले अमेरिका, रूस और जापान जैसे समृद्धशाली देश आज आत्मनिर्भर क्यों होते! अब यदि हम उनको आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं तो शायद कहीं कुछ हमारे में ही कमी रह गई है और उस कमी को हमें सबसे पहले जानना होगा।

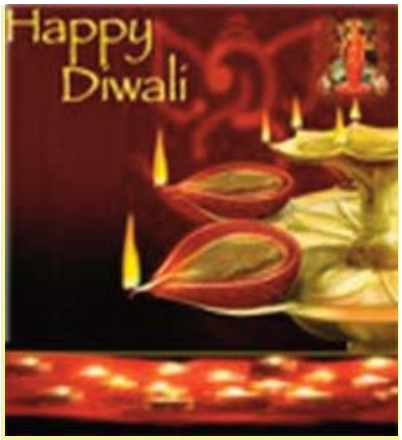

श्री लक्ष्मी के स्वागत में प्रतिवर्ष दीपमाला जलाकर भी भारत आज दरिद्र क्यों है? क्या श्री लक्ष्मी जी हमसे रूठ गई हैं? या फिर उनकी विधि पूर्वक पूजन-अर्चन में कुछ कमी आ गई है? यदि घरों की सफाई, पुताई और मिट्टी के दीपकों को जलाने से लक्ष्मी प्रसन्न हो जातीं तो सदियों से लक्ष्मी का आराधक आज दरिद्र और कंगाल क्यों होता! तथा लक्ष्मी को न मानने वाले अमेरिका, रूस और जापान जैसे समृद्धशाली देश आज आत्मनिर्भर क्यों होते! अब यदि हम उनको आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं तो शायद कहीं कुछ हमारे में ही कमी रह गई है और उस कमी को हमें सबसे पहले जानना होगा।

आज विश्व-मानव परिणाम जनित विचार रखता है और हमेशा परिणामों के तहत किसी भी त्योहार का आंकलन करता है। जैसे ही हम सुविधा ढूंढ़ते हैं वहीं से दुविधा शुरु हो जाती है। आज मनुष्य विषयों के चिंतन में रहता है जिसमें सबसे अधिक- शब्द, रूप, रस, गंध व स्पर्श प्रमुख हैं। जब इन विषयों की अधिकता प्रचुर मात्रा में हो जाती है तो वे विकार बन जाते हैं। वस्तुत: आज मानव इन्हीं विकारों के वशीभूत है। विकारों के वशीभूत होने से ही आत्मा का प्रकाश आज मलीन हो गया है और हम श्री लक्ष्मी को आकर्षित करने में कमज़ोर रह गये। मनुष्य की अंतरात्मा आज इतनी तमसाछन्न है कि श्रीलक्ष्मी तो बहुत दूर की बात है, कोई साधारण मनुष्य भी उससे आकर्षित नहीं होता। ऐसे मनुष्यों के घर में श्रीलक्ष्मी कैसे आ सकती हैं?

कमलापति की कमला के रूप में सुशोभित श्रीलक्ष्मी कमल पुष्प पर विराजित हैं। आज मानव कमल पुष्प की तरह साफ, स्वच्छ और न्यारा नहीं है। वो पूरी तरह से विषय के गटर में पड़ा हुआ है। वैसे भी कहते हैं कि समान मनुष्यों के बीच ही बातचीत होती है। अगर हम असमान हैं तो लक्ष्मी या हरियाली हमारे यहाँ कैसे आ सकती है?

अमावस्या की काली रात की तरह आज मानव के अंदर चतुर्दिक अंधियारा छाया हुआ है। कहीं कुछ सूझ नहीं रहा है, सभी आत्माओं की ज्योत बुझ चुकी है। सभी एक दिव्य ज्योति की तलाश में हैं कि कहीं से एक ऐसा प्रकाश आ जाये जिससे चहुँ ओर उजाला हो जाये। शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है कि श्रीलक्ष्मी जी किसी के भी घर जाने से पहले श्रीनारायण से आज्ञा लेती हैं। अब इसका अर्थ ये हुआ कि श्रीनारायण को जब तक हम प्रसन्न नहीं करेंगे तब तक श्रीलक्ष्मी का आगमन हमारे यहाँ नहीं होगा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ये शिक्षा दी जाती है कि यदि आपको श्रीनारायण का पद प्राप्त करना है तो मनुष्य कर्म से निकलकर देवत्व वाले कर्म करने होंगे। उसके लिए सभी आत्माओं के पिता परमपिता परमात्मा निराकार शिव के साथ संबंध जोड़ने होंगे। इससे हम सम्पूर्ण निर्विकारी बन जायेंगे और हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और संबंध समाप्त हो जायेंगे तथा दैवी स्वभाव-संस्कार आ जायेंगे। इसी के यादगार में शायद व्यापारी लोग इस दिन पुराने खातों को बंद कर नया खाता खोलते हैं। आध्यात्मिकता भी यही कहती है कि हमें आसुरी अवगुणों का खाता बंद करना चाहिए। हम निर्विकारी बन उस परम ज्योति से आत्मा की ज्योति जगाकर सदा के लिए जागती ज्योत बन सकते हैं। इसी का यादगार दीपावली के अवसर पर निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी भी देवी-देवता के मंदिर में दीप सदा नहीं जलता रहता है। इसका मिसाल यह है कि आज भी भगवान विश्वनाथ के मंदिर में अनवरत दीप जलता रहता है जो परमात्मा शिव की जागती ज्योत का प्रतीक है।

दीपावली के दिन हरियाली लाने के लिए लोग जुआ आदि खेलते हैं, कहते हैं कि इससे व्यक्ति की गति बहुत अच्छी होती है। अब भला ऐसा कैसे संभव हो सकता है? जुए में थोड़ी सी सम्पत्ति हम दांव पर लगाते हैं और उससे कई गुणा होकर हमें मिलती है। इसका भी कुछ आध्यात्मिक रहस्य है कि जब पतित पावन परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं तो वे हम जीव आत्माओं से कहते हैं कि आप अपना कौड़ी तुल्य तन, मन, धन दांव पर लगाओ, अर्थात् सेवा में लगाओ। इससे आपको इक्कीस जन्मों के लिए अखुट धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हो जायेगी। दीपावली के सच्चे रहस्यों को न जानने के कारण आज मनुष्य उसे सिर्फ सामाजिक उत्सव के रूप में मनाते हैं और अपना सबकुछ गंवाते हैं। दिवाली, दिवाला निकाल देती है और हरियाली आने के बजाए हम बदहाली में चले जाते हैं।

अब यदि हमें सच्ची दीपावली मनानी है तो ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मंदिर की सफाई कर सदा जागती ज्योत निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति को जगाना होगा और आसुरी अवगुणों का खाता खत्म करना होगा। मन की मनोस्थिति को उन सभी आध्यात्मिक गुणों से, जो हमें सदैव खुशियों की झूले में झुलाते हैं को अपनाना होगा। सारी कुरीतियों को सदा काल के लिए दफन कर हमें आत्म स्वरूप में स्थित रह जागती ज्योत बन विश्व के सभी अधमगति को प्राप्त हुए मनुष्यों की ज्योति जगाकर हरियाली पैदा करनी होगी, तभी सच्ची दीपावली हम मना पायेंगे।

अहमदनगर। भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह को 100 प्रकार के फूलों के गुलदस्ते द्वारा ''भगवान धरती पर आ चुके हैं'' का संदेश देते हुए ब्र.कु. दीपक।

जयपुर-भवानी नगर। सांसद रामचरण बोहरा को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमा।

फतेहगढ़। ब्रिगेडियर ए.एस. रावत,कमाण्डेंट सिख लाई सेंटर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुमन।

भवानीगढ़-पंजाब। विधानसभा के सांसद सकतर जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.रविंदर।

नोहर-राज.। अलविदा तनाव कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. विनोद मुंड, ब्र.कु.विजय ब्र.कु.लक्ष्मी तथा अन्य।

दमण-यू.टी.। कलेक्टर गौरवसिंह राजावत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कांता।